शोध मंथन Vol. XIII No.III July-Sept. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

''सांची की बौद्ध कला में नगरीय रूपांकन''

प्राप्तिः 22.08.2022
स्वीकृतः 17.09.2022

68

डा० अरविन्द कुमार राय
प्रा० इतिहास स०, पुरातत्व विभाग
नागरिक पी०जी० कॉलेज
जंघई, जौनपुर
ईमेलः *drarvindrai1@gmail.com*

सारांश

प्रारम्भिक बौद्ध कला में दृष्टांकित नगर एवं नगर जीवन के अध्ययन की दृष्टि से साँची में निर्मित स्तूप अतीव महत्व रखते हैं यद्यपि इन शिलांकित कथानकों का उद्देश्य जन साधारण को महात्मा बुद्ध के जीवन की प्रमुख घटनाओं तथा बौद्ध धर्म के सिद्धान्तों से परिचित कराना था। तथापि इसका उद्देश्य सीमा सिर्फ धार्मिक रेखा के साथ ही आबद्ध न रह सकी और यह अपने एंकागी आवरण को तोड़कर धर्मिक विषयों के साथ–साथ अन्य विविध धर्मैत्तर विषय के सहज समावेश के साथ उन्मुक्त रूप से हमारे सामने आयी।

साँची की बौद्ध कला के समस्त अवयवों के रूप सम्पादन में, शिल्पियों की मौलिक सूझ, भिक्षुओं, उपासकों और उपासिकाओं की गंभीर धार्मिक भावना, दृढ़ भक्ति तथा अनन्य श्रद्धा एवं तद्प्रेरित कलात्मक अभिरूचि का ही परिणाम था। यद्यपि बौद्ध धर्म निवृत्त मार्गी धर्म तथा नगरीय चकाचौध से इसका कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। तथापि प्रसंगवस गौतम बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओं के साथ ही स्वयं बुद्ध से सम्बन्धित विभिन्न नगरों तथा नगर–जीवन के अनेक पक्ष तत्कालीन कलाकारों तथा शिल्पियों के हस्तकौशल के साक्षी बने।

इसी क्रम में बुद्ध–जन्म का निरूपण करते समय कपिलवस्तु का यदि एक ओर रूपांकन हुआ तो दूसरी ओर धर्म प्रचार के विषय में कौशाम्बी, वैशाली, राजगृह, श्रावस्ती, जेतुत्तरनगर, कुशीनगर' आदि नगर तथा नगर सुरक्षा के साधन प्राकार, परिखा, नगरद्वार, कोष्ठक इन्द्रकोष, उद्यान तथा नागरिक शालाओं के रूपांकन स्तूप कला के साक्षी बने।

मुख्य बिन्दु

परीखा, प्रकार, नगरद्वार द्वार–कोष्ठक, इन्द्रकोष, उष्णीष, भूवेदिका, हर्मिका, अल्लकप्प, कोलिय, वेसर शैली, कपाट।

प्रस्तावना

प्राचीन ककणाव या ककणाय, ककनादवोट, वोटश्रीपर्वत, महाचेतियगिरी श्रीपर्व्वत आदि नामों से अभिज्ञात साँची आधुनिक, मध्यप्रदेश के भोपाल जिले के दीवानगंज नामक तहसील में प्राचीन विदिशा या आधुनिक भिलसा (बेसनगर) से पाँच मील की दूरी पर स्थित है। साँची का बुद्ध जीवन से कोई

सीधा सम्बन्ध न था, साँची का राजनीतिक इतिहास विदिशा से अभिन्न रूप से सम्बद्ध रहा है। तत्कालीन समय में विदिशा व्यापार का एक प्रमुख केन्द्र था। यह उस राजमार्ग के समीप था, जौपाटलिपुत्र से कौशाम्बी होकर विदिशा के रास्त उज्जैन होते हुए भड़ौच जाया करता था, तथा मथुरा से प्रतिष्ठान को जाने वाला महापथ भी विदिशा के सन्निकट से गुजरता था। इस तरह विदिशा के सन्निकट स्थित साँची का भू–भाग एक चौराहा था जिसके महत्व को ध्यान में रखकर यहाँ की पहाड़ियों पर बड़ी मात्रा में स्तूपों, विहार तथा चैत्यों का निर्माण कराया गया। यहाँ के मुख्य पहाड़ी पर स्थित स्तूप संख्या–1, 2, 3 प्राचीन भारतीय शिल्प कला के भव्य उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। प्राचीन भारत के नगरीकरण एवं नगर जीवन के अध्ययन की दृष्टि से स्तूप संख्या एक अतीव महत्व रखता है।

स्तूप संख्या एक जिसे 'महास्तूप' की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। यह मूलतः अशोक के समय में ईटों का बना था। प्रारम्भ में स्तूप का व्यास 60 फिट तथा ऊँचाई 25 फिट था; शुग काल में इसका शिलाच्छादन किया गया। इसके ऊपर महीन लेप का खोल चढ़ाया गया जिसके ऊपर सफेद रंग की गचकारी की गयी। जिससे इसका व्यास लगभग द्विगुणित होकर 120 फुट तथा ऊँचाई 54 फुट हो गई। साथ ही स्तूप के भू–सतह पर महावेदिका एवं मध्य में मध्य मेधि पर सोपान युक्त वेदिका तथा शीर्षस्थ हम्रिका महाछत्र आदि का निर्माण किया गया। स्तूप का आकार अर्धचन्द्रकार या औधे कटोरे के समान हैं। इसकी भूवेदिका कुल मिलाकर ग्यारह फुट ऊँची है। इसमें लगे स्तम्भों की ऊँचाई नौ फुट हैं, दो स्तम्भों के बीच दो फुट की दूरी हैं, इनके बीच दो सूचियाँ हैं, जिनकी लम्बाई दो फुट है। स्तम्भों के मस्तक पर गोल मुड़ेर वाला बड़ा मण्डलाकार उष्णीष है। उष्णीष के आपसी जोड़ और वेदिका स्तम्भों के साथ जोड़ने की चूल और चोटियों का प्रयोग काष्ठ शिल्प की अनुकृति प्रतीत होती है। जहाँ तक भू–वेदिका पर शिल्पांकन का प्रश्न यह अन्य स्तूपों के विरूद्ध पूर्ण रूप से अनलंकृत है अन्यथा भारत के अन्य सभी स्तूपों की भूवेदिका पर प्रभूत शिल्यांकन प्राप्त होता है। यहाँ इसकी कमी को भू–वेदिका को चार समान भागों में विभाजित करते हुए चारों दिशाओं में चार तोरण द्वारा बनाकर उन्हें प्रकृष्ट रूप से अलंकृत कर इस कमी को पूरा किया गया है।

अभिलेखिक साक्ष्यों के आधार पर दक्षिणी तोरण द्वार सर्वप्राचीन माना जाता है, जिस पर शतकर्णी के आवेशिन आनन्द द्वारा प्रदत्त दान का उल्लेख है। इसके पश्चात् क्रमशः उत्तरी, पूर्वी एवं पश्चिमी तोरण निर्मित हुए थे। जहां तक तोरण द्वारों के बनावट का सम्बन्ध है, वे आकार में एक जैसे तथा 34 फुट ऊँचे हैं, प्रत्येक द्वार में दो भारी स्तम्भ है। इनके ऊपर शीर्षक हैं। शीर्षकों के ऊपर तीन आड़ी धरनों का पंजर है धरनों के दोनों तरफ के सिरे पर आवर्त्त अलंकरण है। शीर्षकों पर रखे हुए चार चौकोर ठीहे प्रत्येक धरन को एक–दूसरे से अलग करते हैं। इनके बीच गजारोही या अश्वारोही शिल्पित है, जिनका दर्षन आगे पीछे दोनों तरफ से होता है, स्तम्भ और निचली धरन के बाहरी कोनों पर शालभंजिकाएं लगाई गयी हैं।

साँची की वेदिका एवं तोरण द्वारों पर उत्टंकित अभिलेख इस तथ्य के प्रबल एवं सक्षम साक्षी है कि इनके निर्माण में सामान्य जनता से लेकर शिल्प कारीगरों तक ने अपने प्रभूतदान से इसका निर्माण कराया था, इसमें किसी एक व्यक्ति विशेष का हाथ न था। भरहुत की तरह साँची भी जन सामान्य के उदार दानों से निर्मित हुआ था फलतः सामान्य जीवन की नयनाभिराम झाँकी यहां के शिल्प में दिखायी देती है। अभिलेखिक साक्ष्यों से अभिज्ञात होता है कि विदिशा के हाथी दांत के कारीगरों के संघ ने भी यहाँ दान दिया था, जिसके निर्माण में स्वयं उनका भी हाथ रहा होगा। सभी विद्वानों ने हाथी दाँत के महीन कार्य का प्रभाव यहा के शिल्प में स्वीकार किया है।

शिल्प के विषय–वस्तु की दृष्टि से साँची स्तूप संख्या एक भरहुत शिल्प से साम्य रखते हैं जिसमें कुछ नवीन दृश्यों का संयोजन भी किया गया है। यहाँ के शिल्प को दो वर्गों में बांटा जा सकता है। पहले वर्ग में वे दृश्य हैं, जिनका संपुजन एक योजना के अनुसार किया गया है। दूसरे वर्ग में अलंकरण एवं प्रतीकात्मक चिन्ह हैं, जिन्हें बहुत बार दुहराया गया है। इन दोनों वर्ग के शिल्पों से तोरण द्वारों एवं उनके बड़ेरियों के स्तम्भों के अग्र एवं पृष्ठ आकण्ठ अलंकृत है। इनका प्रमुख विषय बुद्ध के जीवन से सम्बंधित घटनाओं का अंकन करना था।

साँची के स्तूप संख्या एक के तोरण द्वारों पर बौद्ध धर्म के लौकिक मान्यताओं एवं विश्वासों से सम्बन्धित अनेक दृश्यों का अंकन हुआ है, इसी क्रम में प्रसंगवश अनेक नगर तथा नागरिक जीवन से सम्बन्धित दृश्य भी उत्टंकित किए गए जो तत्कालीन नगर तथा नगर–जीवन के अध्ययन की दृष्टि से अतीव महत्वपूर्ण हैं। इनमें कालक्रम की दृष्टि से सर्वप्रथम निर्मित दक्षिणी तोरण द्वार का उल्लेख किया जा सकता है। इस तोरण द्वार के निचली बडेरी के पृष्ठ तल पर उत्टंकित कुशीनगर का दृश्यांकन महत्वपूर्ण है। यह दृश्यांकन दीघनिकाय के महापरिनिब्बान सूत्र के उस घटना पर आधारित है जिसके अनुसार महात्मा बुद्ध की मृत्यु मल्लों की राजधानी कुशीनारा में हो गयी। शास्ता की मृत्यु की खबर सुनते ही राजगीर के अजातशत्रु, वैशाली के लिच्छविय, कपिलवस्तु के शाक्य, अल्लकप्प के बुलिय रामग्राम के कोलिय, वेठदीप के ब्राह्मण तथा पिप्पलिवन के मोरिय कुशीनारा में उपस्थित हुए तथा शास्ता के धातु–अवशेषों के लिए अपना–अपना दावा पेश किया। पहले तो मल्ल अस्थि अवशेषों को बांटने के लिए तैयार न हुए, जिससे संघर्ष की स्थिति उपस्थित हो गई, पर बाद में द्रोण के हस्तक्षेप से वे सहमत हुए, तथा उसमें से बराबर–बराबर एक–एक भाग सभी नरेशों को दिया गया। इन आठ अस्थि अवशेषों पर इन लोगों ने आठ स्थानों पर स्तूप का निर्माण करवाया।

इसी घटना का दृश्यांकन करते हुए साँची के दक्षिणी तोरण के निचली बडेरी के पृष्ठ तल पर कुशीनगर आकारित है। यह दृश्य नगर वास्तु के अध्ययन की दृष्टि से अतीव महत्वपूर्ण है। नगर सुरक्षा के साधनों में यहाँ इष्ट का प्राकार का निर्माण किया गया है। प्राकार में यथा स्थान बुर्ज एवं द्वार कोष्ठक से युक्त प्रवेश द्वार (गोपुरम्) का निर्माण किया गया है, यहाँ दो प्रवेश द्वार दिखाई दे रहें हैं। दाहिनी तरफ के प्रवेश द्वार के ऊपर जो अट्टालक अथव द्वारकोष्ठक बना है, उसकी छत अन्य अट्टालकों के विरूद्ध समतल बनाया गया है तथा सुन्दरता हेतु छत के किनारें कंगूरे बने हुए हैं। प्राकार के बाहर परिखा का अंकन है जिसमें कमल तथा उनके बीच तैरते राजहंस आकारित हैं। नगर के मध्य राजमहल एवं अन्य अलिन्द तथा नागरिक शालाओं का अंकन है जिसकी छत वेदिका युक्त वायायनों से नगर के नागरिक दृश्य का अवलोकन कर रहे हैं; इनकी छतें वेसर शैली में ढ़ोलनाकार निर्मित है। उसी फलक के ऊपरी भाग में हाथियों के सिर पर छोटी पेटिका जिस पर छत्र दीख पड़ता है, यानी बाक्स किसी चक्रवर्ती नरेश या महान व्यक्ति से सम्बन्ध रखता है। इसका भाव यह है कि जिस अस्थि–भस्म के लिए आठ शासकों में जो झगड़ा हुआ था, वह शान्त हो गया। हाथी उसी भस्म–पात्र को लेकर जा रहे हैं।

सांची में स्तूप संख्या एक के उत्तरी तोरण द्वारा के मुख्य भाग के निचली बड़ेरी पर वेसन्तर जातक कथा का निरूपण करते हुए बेसन्तर की राजधानी 'जेतुत्तर' नगर का अंकन प्राप्त होता है। नगर –वास्तु एवं वस्त्राभूषण के अध्ययन की दृष्टि से यह दृश्यांकन महत्वपूर्ण है। यहां नगर का प्राकार देखा जा सकता है जिसका निर्माण ईटों अथवा प्रस्तर के समान आकार की ईंटों के द्वारा किया गया है। इसका प्रवेशद्वार, अट्टालक एवं द्वारकोष्ठक इत्यादि का अंकन दृष्टिगोचर होता है।

नगर के भीतरी भाग में नागरिक शालाओं, छज्जों, बालकनी, तथा वतायनों से नीचे के दृश्य का अवलोकन करते नागरिक तथा नगर स्त्रियों को देखा जा सकता है।

पुनः इसी तोरण द्वार के पृष्ठभाग के मध्यवर्ती बड़ेरी के वामपार्श्व भाग पर पुनः वेसन्तर जातक कथा का निरूपण करते हुए 'जेतुत्तर नगर' का अंकन प्राप्त होता है। यहां नगर की सुरक्षा हेतु इष्ट का प्राकार बनाया गया है, जिसका ऊपरी भाग समतल न बनाकर क्रमशः पिरामिडाकार बनाया गया है। नगर में प्रवेश हेतु प्रवेश द्वार (गोपुर) का निर्माण किया गया है। साथ ही इसके ऊपर दो तलों वाला अट्टालक बनाया गया है जिसमें नगर सुरक्षा हेतु सैनिकों के बैठने की व्यवस्था है, किन्तु यहाँ इस समय कोई सुरक्षा सैनिक दिखाई नहीं दे रहा है। प्राकार के बाहर परिखा का विधान किया गया है। यह जल परिखा है जिसमें नगर की सुरक्षा के साथ नगर के सुन्दरता की अभिवृद्धि हेतु कमल तथा उसमें तैरते राजहंस आकारित है। नगर द्वार से दो पुर सुन्दरियां हाथ में जलपात्र लेकर परिखा से जल भरने के उद्देश्य से बाहर निकली हुई देखी जा सकती हैं। परिखा के तट पर नगर उद्यान का अंकन हुआ है। नगर के भीतर नागरिक शालाओं का अंकन हुआ है जिसके वातायन तथा वेदिकायुक्त आलिन्द में बैठे नागरिक एवं नगर स्त्रियाँ बाहर के दृश्य का अवलोकन करते हुए उत्टंकित है। आलोचित नगर दृश्य नगर स्थापत्य तथा नागरिक जीवन, उसके वस्त तथा आभूषण, केश–विन्याश के अध्ययन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

उत्तरी तोरण–द्वार के मुख्य भाग के पूर्वी स्तमभ पर श्रावस्ती नगर' के बहिर्मुख का अंकन प्राप्त होता है। यहाँ नगर द्वारा का बड़ा भव्य अंकन हुआ है। नगर द्वार के ऊपर द्वार–कोष्ठक बने हुए हैं, यह तीन मंजिला निर्माण है, सबसे ऊपर वेसर शैली में निर्मित ढोलनाकार छत हैं, सबसे निचली मंजिल में सुरक्षा सैनिक नियुक्त हैं। आचोलित दृश्यांकन में राजा प्रसेनजित को घोड़े पर सवार होकर अपने अनुचारों के साथ नगर द्वार से बाहर निकलते हुए दिखाया गया है। यहाँ सम्भवतः सम्राट प्रसेनजित बुद्ध के दर्शन के लिए जेतवन जा रहे है। नगर द्वार के दाहिनी तरफ प्रकार का शीर्ष भाग दिखाई दे रहा है, यह ईंटों द्वारा बना हुआ प्रतीत होता है। प्राकार के पीछे नागरिक शालाओं का अंकन है।

नगर स्थापत्य के अध्ययन की दृष्टि से उत्तरी तोरण द्वार के मुख्य भाग का पश्चिमी स्तम्भ महत्वपूर्ण है। इस दृश्यांकन में कपिलवस्तु का वहिर्मुख दिखाया गया है। यहाँ नगर द्वारा (गोपुर) का बड़ा सुन्दर अंकन हुआ है। गोपुर ऊपर द्वारकोष्ठक बनाया गया है, जिसकी छत वेसर शैली में निर्मित है जो शुंग कला की विशेषता है। नगर द्वार से एक घोड़ा बिना सवार के आगे चलता हुआ प्रदर्शित है उसके पीछे दो घोड़ों से जुते रथ पर हाथ में छत्र लिये सारथी बैठा है। बाहर अंजलीबद्ध मुद्रा में नागरिक खड़े हैं, जिनके सिर पर वृहदाकार पगड़ी दिख रही है। नगर द्वार से लगा हुआ प्राकार निर्मत है, यह इष्ट का प्राकार प्रतीत होता है जिसका ऊपरी हिस्सा समतल न बनाकर क्रमशः पिरामिडाकर बनाया गया है।

साँची के स्तूप संख्या एक के पूर्वी तोरण द्वार के मुख्य भाग की मध्यवर्ती बड़ेरी पर शाक्य राजधानी कपिलवस्तु से गौतम बुद्ध के 'महाभिनिष्क्रमण' जो अश्व पृष्ठ पर आरूढ़ होकर निकलते हुए दिखाए गए है; उनके पीछे सारथी छन्दक छत्र लिए हुए है। यहाँ नगर प्रकार का एक छोटा भाग दिखाई दे रहा है, यह प्रस्तर प्राकार है। जहाँ तक प्रवेश द्वार का सम्बन्ध है; अन्य नगरों से भिन्न यहाँ तोरण द्वार बनाया गया है। इसमें दो स्तम्भ उर्ध्व खड़े है, जिनके ऊपर एक क्षैतिज रखा हुआ है। बाहर परिखा का अंकन किया गया है। प्रवेश द्वार के सामने हाथ में जल पात्र लिए दो स्त्रियाँ परिखा से

जल भरने के उद्देश्य खड़ी है। परिखा को पार करने हेतु पुल का निर्माण किया गया है। प्रवेश द्वार के बाँयी तरफ द्वार–कोष्ठक' का निर्माण किया गया है जिसके बीच मे प्रवेश द्वार है जिसमें कपाट लगे हुए हैं। ऊपर स्तम्भों के सहारे आलिन्द का निर्माण किया गया है जिसमें सुरक्षा पहरी बैठे हुए हैं। इसकी छत वेलनाकार बनाई गयी है, जिसके ऊपर स्तूपिकाएँ लगाई गयी हैं।

इसी स्तूप के पूर्वी तोरण द्वार के उत्तरी स्तम्भ के दक्षिणी भाग पर सबसे ऊपर कपिलवस्तु के राजाप्रासाद के ऊपरी भाग में 'माया देवी का स्वप्न' का दृश्यांक हुआ है। प्रासाद के ऊपरी छत पर माया देवी सोई हुई हैं, उनके सिर की तरफ एक छोटा सा निर्माण दीख पड़ता है। सम्भवतः कोई कमरा होगा। उसमें छोटे–छोटे छिद्रों वाला जंगला लगा है, इसके छत पर सुन्दरता हेतु पिरामिडाकार वेदिका बनी है। माया देवी के पीछे भी प्रासाद का दूसरा तल दिखाई दे रहा है, इसकी छत वेसर शैली में निर्मित है तथा इसमें चैत्याकार खिड़की लगी हुई हैं, बगल मे मोर बैठा हुआ है, ऊपर हाथी का चित्र खुदा है, जो बुद्ध के जनम का प्रतीक है। इस राजप्रासाद के दाहिनी तरफ एक दूसरा महल दिख पड़ता है जिसमें आलिन्द बनी हुई है, इसकी छत बेलनाकार है जिसमें चैत्य प्रकार की दो खिड़कियां लगी है। इसके नीचे राजा शुद्धोधन को दो घोड़ो से युक्त रथ पर आरूढ होकर प्रधान नगर द्वार (गोपुर) से बाहर निकलते हुए दर्शाया गया है। यहाँ नगर–द्वार कोष्ठक बने हैं जिनकी छत्र स्तम्भों पर टिकी है, इसके छत को बेलनाकार गनाया गया है, जिसमें चैत्य प्रकार का गावाक्ष लगा हुआ है। इसमें बैठे सुरक्षा प्रहरी बाहर देखते हुए अंकित है। निचले भाग में नगर का उद्यान शिलंकित है, जिसे शुद्धोधन ने राज कुमार सिद्धार्थ को उनके विहारार्थ समर्पित किया था। महास्तूप के पूर्वी तोरण द्वार के दक्षिणी पार्श्व स्तम्भ के मुख्य भाग पर मगध की राजधानी 'राजगृह' का अंकन मिलता है। यहाँ मगध राज अजातशत्रु दो घोडों वाले रथ पर सवार होकर बुद्ध के अस्थि अवशेष को स्तूप में गर्भित करने के उद्देश्य से प्रधान नगर द्वार से निकलते हुए प्रदर्शित है।

आलोचित दृश्यांक नगर–वस्तु के अध्यन की दृष्टि महत्वपूर्ण है। यहाँ प्रधान नगर द्वार आकारित है, जिसके ऊपर द्वार–कोष्ठक का निर्माण किया गया है जिसमें सुरक्षा पहरी बैठे हुए हैं। नगर–द्वार के बांयी तरफ नगर प्राकार का छोटा भाग दिखाई दे रहा है। नगर के भीतर नागरिक भवनों का अंकन हुआ है जिसमें मजूती प्रदान करने के लिए पीलरों का प्रयोग किया गया है। इसमें एक तीन मंजिला भवन दिखाई दे रहा है, जिसके पहली मंजिल पर तीन स्त्रियाँ दृश्य का अवलोकन करते हुए अंकित हैं, छत के सामने वेदिका बनी हुई है। दूसरे तल की छत को सहारा देते हुए चार स्तम्भ अंकित हैं दूसरे तल पर तीन तरफ से तीसरी मंजिल का निर्माण हुआ है तथा बीच में खाली जगह है, इनके दोनों तरफ तीसरी मंजिल को सहारा देते हुए चार–चार स्तम्भ अंकित हैं। भवन के बने ऊपरी मंजिल की छत वेलनाकार है जिसमें चौत्य गावाक्ष लगे हुए हैं। इस भवन की दाहिनी तरफ एक दूसरी नागरिक शाला का अंकन है जिसमें नींव से ही छत को मजबूती प्रदान करने के लिए लम्बे–लम्बे स्तम्भों का प्रयोग किया गया है। इन स्तम्भों को अष्ट पहला बनाया गया है, बगल में चौत्य गावाक्ष लगा है, ऊपर की छत वेदिकायुक्त है जिसके पीछे दो स्त्रियाँ खड़ी हैं। भवन निर्माण तकनीक के अध्ययन की दृष्टि से आलोचित दृश्यांकन अतीव महत्वपूर्ण हैं; इससे प्राचीन भारत के नगरों में भवन निर्माण की उच्च तकनीक का पता चलता है।

साँची स्तूप संख्या एक के पश्चिमी तोरण की ऊपरी बड़ेरी के पृष्ठतल पर कुशीनगर का वहिर्मुख का अंकन हुआ हैं। आलोचित दृश्यांकन में मल्ल सरदार बुद्ध के धातु को कुशीनगर ले जाते हुए अंकित है इसमें हाथी तथा घोड़े पर सवार मल्ल सरदार तथा बुद्ध के शिष्य कुशीनगर जाते हुए

प्रदर्षित हैं। यहाँ नगर प्राकार का भव्य अंकन हुआ है, यह प्रस्तर द्वारा निर्मित है। नगर द्वार के ऊपर द्वार कोष्ठक का निर्माण किया गया है, जिसमें नगर रक्षक बैठे हुए हैं।

पुनः इसी तोरण द्वार (पश्चिमी पृष्ठतल) के मध्यवर्ती बड़ेरी पर 'धातुयुद्ध' को दृश्यांकित करते हुए कुशीनगर दृश्यांकित है। नगर के सामने हाथी तथा घोड़ों पर सवार विभिन्न नरेश तथा उनकी सेनाएं कुशीनगर की ओर बढ़ रही हैं। कुछ घोड़े तथा हाथियों पर छत्र दिखाई दे रहा है, इसका अर्थ है कि ये सवार बुद्ध के शिष्य हैं। यहाँ नगर–प्रकार का बड़ा सुन्दर अंकन हुआ है, समान आकर की गढ़ी हुई प्रस्तर की ईंटें एक दूसरे पर दृढ़ता से न्यस्त हैं। प्रो० उदय नारायण राय ने इसकी तुलना कौटिल्य के पाषाणेकाष्टका से की है। प्राकार का ऊपरी सिरा कंगूरे से युक्त बनाया गया है। प्राकार के सामने पद्य परिखा उत्टंकित है। प्राकार में प्रवेश–द्वार बना है, जिसके ऊपर द्वार कोष्ठक का निर्माण किया गया है जिसकी छत स्तम्भों के सहारे पर टिकी है। द्वार–कोष्ठक की छत वेसर शैली में निर्मित हैं जिसमें चौत्य गावाक्ष लगे हुए हैं। नगर द्वार के दाहिनी तरफ इन्द्रकोश बना हुआ है जिसके चारों तरफ वेदिका का निर्माण किया गया है, इसके भीतर दो सुरक्षा सैनिक बैठे हैं।

इस प्रकार साँची की कला में विभिन्न नगर दृश्य दृश्यांकित हैं जो नगर स्थापत्य तथा नागरिक जीवन के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। साँची की इस ओजस्वी एवं प्रखर शिल्प राशि में तयुगीन समाज अपनी समस्त पार्थिव आकांक्षाओं, आकर्षण, भव्यता, सौन्दर्य एवं वर्णनात्मक काल्पनिकता के साथ अभिव्यक्त हुआ है। साँची में शिल्पित आख्यानों में जीवन के प्रति उद्दाम लालसा तथा असंयत आकर्षण पूर्ण वेग के साथ प्रकट हुआ है।

सन्दर्भ

1 कृष्णमूर्ति के0. (1983). मैटिरियल कल्चर ऑफ सॉची. संदीप प्रकाशनः दिल्ली।
2 कुमार, स्वामी ए0 के० (1965). हिस्ट्री ऑफ इण्डियन एण्ड इण्डोनेशियन आर्ट–न्यूयार्क।
3 ग्रूनवेडेल, ए0 (1974). बुदिस्ट आर्ट इन इण्डिया, लन्दन. 1901 (पु0 मु0): वाराणसी।
4 डेविड्स, रिज. (1970). बुद्धिस्ट इण्डिया. (9वॉ सं0) वाराणसी।
5 बर्गेस, जे0 (1902). द ग्रेट स्तूप ऐट सॉची कनाखेड़ा जे० आर० ए० एस।
6 मार्शल, जे0., फूशे, ए0. (1940). द मान्युमेण्टस ऑफ सॉची (3 खण्ड)।
7 राय, उदारय नरायण. (1994). प्राचीन भारत में नगर तथा नगर–जीवन. लोक भारती प्रकाशनः इलाहाबाद (दि. सं.)।